पाठ्य पुस्तकें एवं विद्यार्थी-एक विश्लेषण

शालिनी नागर*

मनुष्य के जीवन के लिए कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं रोटी, कपड़ा और मकान। आज के संदर्भ में इन मूलभूल आवश्यकताओं के साथ ही शिक्षा भी एक मूलभूत आवश्यकता है। बिना शिक्षा के आज के इस ग्लोबलाइज़ेशन के युग में मनुष्य समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में असमर्थ है। पहले की तुलना में आज शिक्षा को लेकर समाज में जागरुकता उत्पन्न हुई हैं, और इस जागरुकता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रम, योजनाएँ, प्राइवेट सैक्टरों के माध्यम से शिक्षा के महत्त्व का प्रचार-प्रसार महत्त्वपूर्ण है। इस लेख के अन्तर्गत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) की पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा के स्तर को बढ़ाने और अनुसंधान बच्चों में पाठ्य पुस्तकों के प्रति रुझान को व्यक्त किया गया है। इस लेख में कक्षा छः से कक्षा आठ तक की पुस्तकों को आधार रूप में लिया गया है।

पुस्तकें ज्ञान का अक्षय भंडार होती हैं। बच्चों के प्रथम शिक्षक उसके माता-पिता होते हैं, उसके पश्चात् वह विद्यालय जाता है और पुस्तकों के संपर्क में आता है। विद्यालय में पुस्तकें ही बच्चे की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। इस संदर्भ में एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकों के आमुख में भी लिखा है कि *"ज्ञान के अनेक नए साधन बाज़ार में आ जाने पर भी पुस्तक ने अपनी उपयोगिता खोई नहीं है। बल्कि, आज भी विद्यार्थी के लिए अध्यापक के बाद यदि कोई वस्तु सर्वाधिक महत्त्व रखती है, तो वह पुस्तक ही है।"* बच्चे प्रारंभ से ही पुस्तकों के संपर्क में आ जाते हैं। दो-चार साल की अवस्था तक आते-आते ही शिशु रंग-बिरंगी पुस्तकों की ओर आकर्षित होता है, तत्पश्चात् वह विद्यालय जाता है और पाठ्य पुस्तकों के संपर्क में आता है। ऐसी स्थिति में यदि पुस्तकें उसके स्तर की न हो तो वह विद्यार्थी को सहज प्रतीत होने की जगह बोझिल लगती हैं, और विद्यार्थी उनसे दूरी बनाने लगने लगते हैं। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों के मानसिक विकास के लिए पुस्तकों का स्तर कैसा होना चाहिए? पाठ्य पुस्तकों को किस प्रकार रुचिकर और आकर्षित

**शोध छात्रा (पी.एच.डी.)* हिंदी विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उ.ख.)

बनाया जाए, जिनसे बच्चों को उनका अध्ययन करने में बच्चों को उबाऊपन न लगे और पढ़ने में उत्सुकता उत्पन्न हो, ये कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनको ध्यान रखना आवश्यक है।

उपर्युक्त प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए उनके उत्तर के लिए एन.सी.आर.टी.ई. की पाठ्य पुस्तकें उपर्युक्त हैं। क्योंकि इन पुस्तकों का स्तर प्रत्येक कक्षा के अनुसार और बच्चों के मानसिक विकास तथा उनकी ग्रहण क्षमता के अनुरूप ही रखा गया है। विद्यार्थियों को किस प्रकार पुस्तकों के समीप रखा जाए और प्रश्न–उत्तर के जाल में न फँसाया जाए, जैसे विशेष बिंदुओं पर ध्यान दिया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की *पाठ्य पुस्तकें पाठ्यसामग्री* और पाठ्यक्रम की दृष्टि से काफ़ी समृद्ध पुस्तकें हैं। चाहे विषय 'सामाजिक विज्ञान' हो या 'राजनीतिक विज्ञान', **अंग्रेज़ी** हो या **हिंदी**, **गणित** हो या **पर्यावरण अध्ययन** हो, इन सभी विषयों में ज्ञानवर्द्धक पाठ की योजना की गई है। कक्षा के स्तर के अनुरूप उनके अन्तर्गत अध्यायों को रखा गया है, अर्थात् छठी कक्षा की पुस्तकों में बच्चों के स्तर के अनुसार ही पाठयोजना की गई है और उसके बाद सातवीं और आठवीं कक्षा में पाठ का स्तर बढ़ाया गया है।

कक्षा छः में न केवल पाठ के विषय बल्कि उनके अन्तर्गत क्रियाकलाप भी विद्यार्थी के स्तर के अनुसार ही बनाए गए हैं। सामाजिक और राजनीतिक जीवन और पृथ्वी हमारा आवास के अन्तर्गत विषय की प्रथम सीढ़ी को बताया गया है। जैसे सरकार क्या है? पंचायती राज, ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका आदि पाठों को रखा गया है, जिससे विद्यार्थी को पहले आधारभूत ज्ञान प्राप्त हो। पृथ्वी हमारा आवास में सौरमंडल में पृथ्वी, पृथ्वी की गतियाँ, मानचित्र आदि पाठ रखे गए हैं। **हिंदी** विषय में 'बाल रामकथा' को रखा गया हैं जिसके अन्तर्गत **रामायण** के प्रमुख अंगों एवं अंशों को सरल व सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही प्रसिद्ध व मुख्य कवियों एवं लेखकों की **कविताएँ**, **कहानी** तथा अन्य **गद्य** विधाओं की रचनाएँ रखी गई हैं। जिनके माध्यम से विद्यार्थी प्रमुख लेखकों एवं कवियों की लेखनी से अवगत होंगे साथ ही **विधाओं** के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। गणित में **बेसिक गणित** को उदाहरण सहित व्याख्यायित किया गया है। विद्यार्थियों को रोचक तथ्यों के माध्यम से खेल–खेल में गणित समझाया गया है। **अंग्रेज़ी** में ज्ञानप्रद पाठों को रखा गया है, जो कोई न कोई शिक्षा, विद्यार्थी को प्रदान करते हैं। **विज्ञान** के अंतर्गत भी आधारभूत जानकारियों को प्रदान किया गया है जिसमें भोजन, कपड़ा, गति, परिवर्तन आदि के बारे में **जानकारियाँ** व महत्त्वपूर्ण तथ्यों को बताया गया है।

कक्षा छः में पाठ्यक्रमों के भीतर 'आओ कुछ करके देखें', 'क्या आप जानते हैं?' जैसी अभ्यास पद्धति का प्रयोग किया गया है। 'आओ कुछ करके देखें' के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा कुछ गतिविधियों को कराने का प्रयोजन होता है, जिससे विद्यार्थी क्रियाशील बनें। यथा–"पर्वत बनाना–

1. आपको बहुत मात्रा में कागज़ चाहिए।
2. कागज़ों को मेज़ पर रखिए।
3. कागज़ों को अपने हाथों से दोनों तरफ़ से दबाइए।
4. कागज़ में मोड़ पड़ जाएँगें तथा वे एक चोटी की तरह ऊपर की ओर उठ जाएँगे।

5. इस प्रकार आपने एक पर्वत बना लिया।"[1]

सामाजिक विज्ञान के पाठों को **कहानी** के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। जिससे विद्यार्थियों को पाठ समझने में आसानी हो। **विज्ञान** में क्रियाकलापों के माध्यम से विषयों को सरल बनाया है। **गणित** में पाठ के अंत में दिए गए 'हल करो' के अतिरिक्त पाठ के बीच में 'यह करें' के माध्यम से अन्य प्रश्नों को भी दिया गया है जिससे विद्यार्थी को अभ्यास करने के लिए अतिरिक्त प्रश्न मिल जाते हैं।

कक्षा छः में विद्यार्थियों को *खेल-खेल* में जिस प्रकार शिक्षण देने की योजना की गई है वह एक दृष्टि से तो उपयोगी है किंतु वहीं किन्हीं परिवेशों में हानिप्रद भी हो सकती है क्योंकि शिक्षक यदि वह कार्यकलाप सही दिशा में न कराए, तो विद्यार्थियों को हानि पहुँच सकती है। अतः तात्पर्य यह है कि विद्यार्थी स्वतंत्रता का अधिक फ़ायदा उठा सकते हैं पढ़ाई पर अधिक ध्यान न देकर अन्य कार्य में ही व्यस्त रहकर समय बर्बाद कर सकते हैं, तो शिक्षक को इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

कक्षा सात की पाठ्य पुस्तकों में शिक्षा का स्तर और बढ़ जाता है। कक्षा छः में विषयों की आधारभूत जानकारी दी जाती है, वहीं कक्षा सात में विषयों की थोड़ी विस्तृत जानकारी दी गई है। साथ ही पाठ्यक्रम का स्तर भी ऊँचा किया गया है। **इतिहास** की दृष्टि से भी विद्यार्थियों को महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सर्वप्रथम बताया गया है और विद्यार्थियों को पूरा ज्ञान प्राप्त हो इसका पूरा ध्यान दिया गया है। **पर्यावरण** के विषय में संतुलित रूप से विद्यार्थियों को जानकारियाँ प्रदान की गईं हैं। **सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-2** में आरंभ में ही पुस्तक का संपूर्ण संक्षिप्त सार दिया गया है कि कक्षा सात में किन मुद्दों को उठाया गया है।

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तक में न केवल विद्यार्थी के लिए बल्कि शिक्षक के लिए समझ को आधार बनाकर आवश्यक सूचना दी जाती है कि किस प्रकार शिक्षक पाठ्यक्रम को विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत करें। शिक्षकों के लिए एक भूमिका लिखी गई है जिसमें शिक्षकों की कक्षा में भूमिका का भी और साथ ही उनसे अपेक्षित भूमिका को बताया गया है। जैसे ''कक्षा में अध्यायों को पढ़ाने की महत्त्वपूर्ण क्रिया के अलावा यह **विषय** शिक्षकों से और कौन-सी ज़रूरी भूमिका निभाने की उम्मीद रखता है?'[2] इस प्रकार शिक्षकों के लिए एक रूप से संदेश लिखा जाता है। पाठ्यक्रम में समानता, जेंडर बोध, बाज़ार जैसे पाठों को रखा गया है। हिंदी में बाल **महाभारत** की एक पुस्तक पाठ्यक्रम में लगायी गई है। जिस प्रकार कक्षा छः में बाल रामकथा लगायी गई थी उसी प्रकार कक्षा सात में बाल महाभारत कथा को रखा गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी को भरतीय संस्कृति की जानकारी प्राप्त हो। वसंत भाग-2 में विद्यार्थियों को साहित्य से परिचित कराया जाता है। जिसमें कहानी, निबंध, कविता, नाटक, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं में रचनाकारों की प्रसिद्ध रचनाओं को विद्यार्थियों को पढ़ाने का प्रबंध किया गया है। इस प्रकार इन सभी विधाओं को पाठ्यक्रम में

[1] राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (संस्करण 2012), *पृथ्वी हमारा आवास*, पृष्ठ सं. 42

[2] _____, *सामाजिक और राजनीतिक जीवन 2*, पृष्ठ सं. 79

रखने का उद्देश्य यही है कि विद्यार्थी, विद्यालयी जीवन में ही सभी विधाओं से परिचित हो जाए और एक ही विधा पढ़ने से पाठक में ऊब उत्पन्न न हो।

कक्षा सात में भी पाठ्यक्रम में 'क्रियाकलाप', 'क्या आप जानते हैं?', 'आओ करें', 'शब्द उत्पत्ति', 'शब्दावली', 'बीज शब्द', 'अन्यत्र', 'चित्रकथा पत्र्क' जैसे प्रयोगों के माध्यम से जानकारियों को एकत्रित रूप में प्रस्तुत किया गया है। क्रियाकलाप में विद्यार्थियों को क्रियाशील बनाने का प्रयास किया गया है। विज्ञान की भाँति विद्यार्थी अन्य विषयों जैसे- पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत भी प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग कर विषय को और अधिक रुचिकर बना सकता है। शब्दावली के अन्तर्गत विशिष्ट शब्दों का अर्थ बताया गया है। यथा- "सहायक नदियाँ—ये छोटी नदियाँ होती हैं, जो मुख्य नदी में मिलती हैं। मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ जिस क्षेत्र के पानी को बहाकर ले जाती है वह उसका बेसिन अथवा जलसंग्रहण क्षेत्र कहा जाता है। **अमेजन बेसिन** विश्व का सबसे बड़ा नदी बेसिन है।"[3] इसी प्रकार पाठ के दायीं या बायीं ओर शब्द उत्पत्ति नाम से विशिष्ट शब्दों की उत्पत्ति को बताया गया है। जैसे- 'प्रेअरी' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द प्रिएटा से हुई है जिसका अर्थ शाद्वल है।"[4] बीज शब्द पाठ के अंत में अभ्यास के एक ओर दिए जाते हैं जिसमें पाठ संबंधित मुख्य शब्दों को एक के नीचे एक दिया जाता है। जैसे- "सूबेदारी, दल खालसा, मिस्ल, फ़ौजदारी, इजारादारी, चौथ, सरदेशमुखी।"[5] चित्रकथा पत्र्क के माध्यम से विषय से संबंधित एक छोटी सी "चित्रकथा"[6] बनाकर प्रस्तुत की जाती है। जिससे विद्यार्थी विषय को मनोरंजन के माध्यम से आसानी से समझ जाता है। इस प्रकार कक्षा सात की पुस्तकों का स्तर और बढ़ जाता है।

कक्षा आठ की सामाजिक और राजनीतिक जीवन की पुस्तक में प्रारंभ में 'शिक्षकों के आरंभिक टिप्पणी' नामक सूचना दी गई है और साथ ही प्रत्येक इकाई से पूर्व उस इकाई से संबंधित जानकारियों की चर्चा की गई है, साथ ही यह भी बताया गया है कि शिक्षक इन जानकारियों को विद्यार्थी के सामने प्रस्तुत करें और अपने वर्तमान ज्ञान के साथ उसकी साम्यता स्थापित करें। "आपको यह सुनिश्चित करने के लिए इन चर्चाओं में अहम भूमिका निभानी है कि कोई भी बच्चों का समूह भेदभाव का शिकार महसूस न करे, किसी को मज़ाक का पात्र बनने या चर्चाओं में अप्रासंगिक हो जाने का बोध न हो।"[7]

पाठ को रुचिकर बनाए रखने के लिए पाठ्य पुस्तकों में कहानियों के माध्यम से विषय को समझाया गया है, जैसे कक्षा आठ की पुस्तक 'संसाधन एवं विकास' में प्रत्येक अध्याय को एक कहानी में बाँधकर प्रस्तुत किया गया है, जिससे वह अध्याय केवल जानकारियों की पोथी न होकर रुचिकर अध्याय बन गये हैं। इसी प्रकार विषयों की विस्तृत जानकारी के लिए चित्रकथा-पत्र्क

[3] *हमारा पर्यावरण,* पृष्ठ सं. 56, एन.सी.ई.आर.टी., संस्करण 2012

[4] *हमारा पर्यावरण,* पृष्ठ सं. 65, एन.सी.ई.आर.टी., संस्करण 2012

[5] *हमारे अतीत 2,* पृष्ठ सं. 153, एन.सी.ई.आर.टी., संस्करण 2012

[6] *सामाजिक और राजनीतिक जीवन 87,* पृष्ठ सं. 79, एन.सी.ई.आर.टी., संस्करण 2012

[7] एन.सी.ई.आर.टी., (संस्करण 2012) *सामाजिक और राजनीतिक जीवन 3,* पृष्ठ सं. 79

5-Chapter.indd 52 6/17/2015 10:47:05 AM

का प्रयोग किया गया है जो कि विद्यार्थियों को पढ़ने में सहज और मनोरंजक लगता है और यह चित्रकथा-पत्र्र किसी विषय को समझाने में सफ़ल प्रयास है, क्योंकि इससे माध्यम से विषय को केवल पढ़ा नहीं जाता बल्कि विद्यार्थी एक नाटक के रूप में पढ़ता है जिससे उससे संबंधित पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।

पुस्तकों के अध्यायों में महत्त्वपूर्ण बिंदुओं से संबंधित तथ्यों, जानकारियों को पृष्ठ के दायीं और बायीं ओर 'आओ कुछ करके सीखें', 'क्या आप जानते हैं?', 'स्त्रोत व गतिविधि', 'रोचक तथ्य', 'अन्यत्र, जैसी विशेष पद्धति के माध्यम से उजागर किया गया है। इन पद्धतियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को कम समय में अधिक जानकारी प्रदान करना है। ऐसा भी नहीं है कि अधिक जानकारी देने के कारण पाठ में कोई कठिनाई उत्पन्न हुई हो। सभी जानकारियों और पाठ को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि वह सहज और आकर्षित लगता है। आओ कुछ सीखें का उदाहरण इस प्रकार है- "अपने घर और कक्षा में उपयोग किए जाने वाले किन्हीं पाँच संसाधनों की सूची बनाओ।"[8] इसी प्रकार 'क्या आप जानते हैं' में भी वर्तमान जानकारी के साथ ही नयी जानकारियाँ भी दी गई हैं—यथा, "अपने घर की छत पर वर्षा जल एकत्र करके, इस जल का संग्रहण करना एवं विभिन्न उत्पादक उपयोगों में लाना वर्षा जल संग्रहण कहलाता है। औसतन दो घंटे की वर्षा का एक दौर 8000 लीटर पानी जल बचाने के लिए काफ़ी है।"[9] इस प्रकार जल संरक्षण जैसी और भी कई जानकारियाँ यदि विद्यार्थियों को दी जाती हैं और यह सराहनीय है क्योंकि इससे न केवल मानव जीवन संरक्षित होगा वरन् प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर हम अपनी पृथ्वी को भी सुरक्षित करेंगे। स्त्रोत व गतिविधि के अन्तर्गत किसी महत्त्वपूर्ण तथ्य को स्त्रोत संख्या के साथ संबंधित विषय की जानकारी प्रस्तुत की जाती हैं और साथ में ही एक ओर गतिविधि का बॉक्स बनाकर उससे संबंधित प्रश्न किये जाते हैं। रोचक तथ्य का उद्देश्य भी नई जानकारियों को प्रदान करना है, जैसे कॉफ़ी की खोज किसने की? जैविक कृषि के बारे में संक्षिप्त एवं पूर्ण जानकारी देना। अन्यत्र के अन्तर्गत किसी समस्या या तथ्य से संबंधित जानकारी को थोड़ा और विस्तृत रूप से बताया गया है, जो पाठ के अंत में रंगीन बॉक्स में लिखी जाती है।

केवल यही नहीं और भी कई प्रकार से विषयों से संबंधित जानकारियों को स्पष्ट किया गया है। प्रत्येक अध्याय में 'शब्दावली' को स्पष्ट किया गया है, जिसमें कठिन शब्दों का सरल अर्थ दिया है। जैसे- "उत्कीर्ण चित्र- लकड़ी या धातु के छापे से कागज़ पर बनाई गई तस्वीर।"[10] हिंदी की पुस्तक में पाठ के अंत में वर्णित 'शब्दार्थ'[11] भी पाठ को समझने में सहायक होते हैं।

विद्यार्थी स्तर पर बच्चों के मानसिक विकास की योजना भी इन पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य

[8] _____, *संसाधन एवं विकास,* पृष्ठ सं.1,

[9] _____, *संसाधन एवं विकास,* पृष्ठ सं.17

[10] _____, *हमारे अतीत भाग 2,* पृष्ठ सं.1,

[11] _____, *वसंत भाग 3,* पृष्ठ सं. 50,

है। अध्यायों के अन्तर्गत विद्यार्थियों के लिए 'क्रियाकलाप', 'आइए कल्पना करें' जैसे कार्य दिए गए हैं जिनके करने पर विद्यार्थी का स्वत: ज्ञान स्थायी होगा। यथा- ''कपास के खेत से अपने घर तक अपनी कमीज़ की यात्रा का पता कीजिए।''[12] इसी प्रकार आइए कल्पना करें का स्तर और भी ऊँचा हैं क्योंकि वह पूर्ण रूप से बच्चों के मानसिक विकास के लिए हैं इसके माध्यम से बच्चा जितनी चाहे कल्पना की उड़ान भर सकता है। जैसे- ''मान लीजिए कि आप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हैं। इस अध्याय को पढ़ने के बाद संक्षेप में बताइए कि आप संघर्ष के लिए कौन से तरीके अपनाते और किस तरह का स्वतंत्र भारत चलाते?''[13]

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकों में संबंधित विषयों के चित्र, तालिका, मानचित्र, रंग-बिरंगें कालम के भीतर महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं, जो पाठ को आकर्षक और रुचिकर बनाते हैं। साथ ही विद्यार्थियों को समृद्ध जानकारी प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं। चित्रों के माध्यम से जानकारी को प्रामाणिक किया गया है और मूर्त रूप प्रदान किया गया है जिससे पाठक वर्ग जल्दी ही पाठ के साथ अपना तारतम्य स्थापित कर पाता है। विषय संबंधित चित्रों के अतिरिक्त भी क्या आप जानते हैं? आओ कुछ सीखें आदि को आकर्षक बनाने के लिए कुछ कार्टून वाले चित्रों का प्रयोग किया गया है जो विद्यार्थी को एक नज़र में अपनी ओर देखने के लिए बाध्य कर देते हैं। नदी, पहाड़, खेती, राज्य, शासन आदि से संबंधित जानकारी मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार तालिकाओं का प्रयोग किया गया है। रंगों का भरपूर प्रयोग किया गया है। प्रमुख जानकारियों, जितनी विशिष्ट पद्धतियों का जैसे शब्दावली, आओ कुछ सीखें आदि को रंगीन शब्दों में उकेरा गया है। विशिष्ट जानकारियों को पाठ के बीच में रंगीन बेस पर उभारा गया है जो विद्यार्थी को अलग से दिखाई पड़ता है और पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। पुस्तकों के अंत के पृष्ठ पर अधिक जानकारी के लिए इंटरनेट के कुछ महत्त्वपूर्ण स्त्रोत वेबसाइट, संदर्भ, भूकंप की स्थिति में विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्देश आदि भी दिए गए है।

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकों के अभ्यास वाले भाग में मात्र प्रश्न उत्तर की पद्धति का प्रयोग नहीं किया गया बल्कि उसमें भी नए-नए प्रयोग किए गए हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों को ज़्यादा से ज़्यादा मानसिक रूप से परिपक्व बनाने का प्रयास किया है और साथ ही पाठ की पुनरावृति, अभ्यास कराने का प्रयास किया गया है। अभ्यास के भीतर 'आओ विचार करें', 'आओ खेलें', जिसमें जासूस बनिए, पहेली बुझाइए आदि खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों को सक्रिय बनाया जाता है। 'कहानी से आगे', 'कुछ करने को', 'भाषा की बात', 'अनुमान और कल्पना', 'रिपोर्ट' , आदि जैसे क्रियाकलाप की योजना कर विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को और अधिक रुचिकर बनाया गया है।

इस लेख के माध्यम से एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकों में समाहित ज्ञान पर चर्चा करने के साथ ही कुछ सुझाव देना चाहती हूँ कि द्वारा

[12] ____, *संसाधान एवं विकास,* पृष्ठ सं.50

[13] ____, (संस्करण 2012) *हमारे अतीत भाग 2,* पृष्ठ सं. 159

5-Chapter.indd 54 6/17/2015 10:47:05 AM

सभी विषयों के ज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करना हितकर होगा, क्योंकि आज के समाज में ज्यों-ज्यों पीढ़ी विकास कर रही है वह कहीं न कहीं अपने मूल्यों से मुँह मोड़ती जा रही है। रेत की तरह फ़िसलते इस समय में मानवीय मूल्यों का ह्रास दिन-प्रति-दिन हो रहा है। अतः समय की माँग को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम के माध्यम से यदि युवा वर्ग में नैतिक मूल्यों के पाठ को शामिल किया जाएगा तो एक स्वस्थ समाज के निर्माण की परिकल्पना की जा सकती है। दूसरा सुझाव यह है कि पुस्तकों में तस्वीरों का साफ़ रूप दिया जाए क्योंकि किसी-किसी तस्वीर को पहचानने में असुविधा होती है, जो विद्यार्थी के पठन में अवश्य ही बाधा उत्पन्न करती है। पुस्तकों में जिन रंगों का प्रयोग किया गया है वह आकर्षक होने चाहिएं, जिससे जिन तस्वीरों और चित्रों को दर्शाया गया है वह विद्यार्थियों को स्पष्ट हो जाएँ और पढ़ने के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करें। पुस्तकों में अक्षरों की लिखावट स्पष्ट व उभार के साथ होनी चाहिए। पुस्तकों के अंत में कुछ प्रश्न-पत्रों को जोड़ दिया जाए जो विद्यार्थियों को अभ्यास करने में भी लाभदायक होगा।

इस प्रकार एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकें विद्यार्थियों को रुचिकर तरीके से शिक्षा के क्षेत्र से जोड़े रखती हैं। ये पुस्तकें अथाह ज्ञान का भंडार बनकर विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। यदि विद्यार्थी इन पुस्तकों को पूर्ण रूप से लगन के साथ पढ़ें तो वह अनेक विशेष एवं महत्त्वपूर्ण जानकारियों को कम समय में प्राप्त कर पाएँगे। एन.सी.ई.आर.टी. का उद्देश्य ही ज्ञान का विस्तार करना हैं। प्रत्येक पुस्तक पर इनका उद्देश्य सर्व शिक्षा अभियान 'सब पढ़ें सब बढ़े' प्रथम पृष्ठ पर अंकित रहता है। इस प्रकार यह प्रामाणित भी होता है कि पुस्तकें विद्यार्थियों के स्थायी ज्ञान की सहचरी होती हैं।